सांध्य दैनिक

क्राईम स्टोरी

देहरादून, शनिवार 13 जनवरी 2018 (RNI No. UTTHIN/2009/30725) वर्ष 9, अंक 139 पृष्ठ 8 1.00 रूपये

प्रमुख संवाददाता

अवैध निर्माण करते रहो सो रहा एमडीडीए!

चकराता रोड़ पर अवैध निर्माणों पर अफ्सरों ने मूंद ली आंखे?

देहरादून। उत्तराखण्ड की अस्थाई राजधानी में एमडीडीए का निर्माण शहर को स्वच्छ सुन्दर बनाने के लिए किया गया और ऐसी उम्मीद थी कि शायद एमडीडीए शहर को सुन्दर और स्वच्छ बनाने की दिशा में बहुत बडी पहल करेगा लेकिन सभी के अरमान धरे के धरे रह गये और एमडीडीए में जिस तेजी के साथ भ्रष्टाचार का खेल कुछ अफ्सर खेलने लगे उससे शहर की सुन्दरता पर बडा ग्रहण लगना शुरू हो गया।

हैरानी वाली बात है कि जिस जनपद में समूची सरकार मौजूद है उस जनपद में कैसे एमडीडीए की नाक के नीचे अवैध निर्माणों का खेल खुलेआम चल रहा है यह एमडीडीए और सरकार की मंशा पर बडा सवाल खडा कर रहा है। अस्थाई राजधानी में जहां हमेशा हरियाली नजर आती थी वहां आज एमडीडीए के कुछ अफ्सरों की मिलीभगत से अवैध निर्माण कर हरियाली को समाप्त करने का जो खतरनाक खेल खेला जा रहा है वह एमडीडीए की कार्यशैली पर बडा सवाल खडा कर रहा है। गजब बात तो यह है कि सरकार भी एमडीडीए पर कभी नकेल लगाने के लिए आगे नहीं आई और न ही उसने यह पता लगाने की कोशिश की कि आखिरकार कैसे शहर में अवैध निर्माण का खेल चल रहा है। सरकार की एमडीडीए पर हमेशा क्यों कृपा बनी रहती है यह सवाल आज भी शहर के गलियारों में चर्चा का विषय बना रहता है। हमेशा उंगलियां उठती रही कि एमडीडीए के कुछ अधिकारियों के पास अकूत सम्पत्ति है और इन अधिकारियों की अगर विजिलेंस जांच हो जाये तो सरकार की आंखे भी खुली की खुली रह जायेंगी कि कैसे उनकी नाक के नीचे कुछ अफ्सर किस तरह से भ्रष्टाचार के खेल में चौके-छक्के लगाकर अपना खजाना भरने में लगे हुए हैं। एमडीडीए के कुछ अफ्सर उन अवैध निर्माणों पर कभी नकेल लगाने के लिए आगे नहीं आते जो पहले से ही एमडीडीए के कुछ अफ्सरों को भेंट चढ़ा चुके होते हैं और जो मकान या दुकान स्वामी एमडीडीए के कुछ अफ्सरों की जेब नहीं भर पाता उसके निर्माण पर हंटर चलाने के लिए एमडीडीए के कुछ अफ्सर आगे आकर ऐसे कार्यवाही करने का दम भरते हैं मानो अवैध निर्माण के खिलाफ उन्होने कितना बडा ऑपरेशन चला रखा हो।

गजब बात तो यह है कि इन दिनों यमुना कालोनी मंत्री आवासों के आस-पास के हाई-वे रोड पर ही कुछ अवैध निर्माण धडल्ले से दिन-रात हो रहे हैं। हैरानी वाली बात तो यह है कि बडे-बडे निर्माण देखकर भी एमडीडीए के कुछ अफ्सर क्यूं अपनी आंखों पर काला चश्मा चढाये हुए हैं यह उनकी मंशा पर बडा सवाल खडा किये हुए है। नियमों की धज्जियां उडाते हुए जिस तरह से अवैध निर्माण का काला कारोबार चकराता रोड पर इन दिनों दिन-रात देखने में मिल रहा है वह एमडीडीए के कुछ अफ्सरों की कार्यशैली पर सवाल खडे कर रहा है। बहस इस बात को लेकर छिडी हुई कि आखिरकार जिस रास्ते से आये दिन सरकार के मंत्री व विधायक के अलावा प्रशासन व पुलिस के अफ्सर आते-जाते रहते हैं उन्हें सड़क के किनारे हो रहे यह अवैध निर्माण क्यों दिखाई नहीं देते यह उनकी मंशा पर भी सवालिया निशान लगा रहा है। अगर पैसे के बल पर अवैध निर्माणों का खेल होना है तो फिर राजधानी में एमडीडीए को अस्तित्व में बनाये रखने का औचित्य समझ से परे है। अब देखने वाली बात है कि क्या सरकार एमडीडीए के उन अफ्सरों पर नकेल लगाने के लिए एक कदम भी आगे बढायेगी जिन्होंने अवैध निर्माणों पर कार्यवाही करने के बजाए उन्हें अवैध निर्माण करने का खुला प्रमाण पत्र दे रखा है। अगर चकराता रोड पर सडक के किनारे अवैध निर्माण हो रहे हैं तो यह एमडीडीए की कार्यशैली पर बहुत बडा सवाल खडा कर रहा है और यह बात उठ रही है कि आखिर अवैध निर्माण पर कार्यवाही का एमडीडीए में क्या पैमाना है।

21 इंफेंट्री से चुराई थी गोलियां!

मद्रास इंफेंट्री ने कारतूस खोके के लापता होने की दी शिकायत

देहरादून। भारतीय सैन्य अकादमी की सुरक्षा व्यवस्था पर उस समय एक बार फिर सवालिया निशान लग गया जब एसओजी ग्रुप ने कैंट घंघौडा इलाके से हजारों खाली कारतूस व सैकडों एसएलआर के जिंदा कारतूस बरामद किये थे। इन कारतूसों के पकडे जाने के बाद देश की खुफ्िया एजेंसियां महिलाओं व कबाडी से पूछताछ में जुटी रही लेकिन सेना ने इस बात का खुलासा नहीं किया कि बरामद कारतूसों से उनका कोई नाता है लेकिन दो दिन पूर्व 21 इंफेंट्री मद्रास के एक कैप्टन ने थाना कैंट में लिखित शिकायत दी कि उनके यहां से हजारों कारतूस के खोखे गायब हैं। अब सवाल उठ रहा है कि आखिरकार 21 इंफेंट्री ने कारतूस व खाली खोके बरामद होने के बाद ही थाने में इसकी शिकायत क्यों दी? ऐसे में शंका उठ रही है कि महिला गैंग ने 21 इंफेंट्री से ही गोलियों के खोके व एसएलआर के कारतूस चुराये थे?

उल्लेखनीय है कि चंद दिन पूर्व एसओजी ग्रुप ने जीएमएस रोड में रहने वाले एक कबाडी से इंसास रायफल के हजारों खाली कारतूस के खोके और 119 एसएलआर के जिंदा कारतूस बरामद किये थे। इन खोकों व कारतूसों के बरामद होने के बाद पुलिस अफ्सर इस मामले में चुप्पी साध गये जबकि यह पता लगाने की कोशिश नहीं की गई कि आखिर कितने बडे पैमाने पर कहां से तीन महिलाओं ने यह कारतूस चुराये थे। पहले दिन से ही इस बात से पर्दा उठ रहा था कि कैंट इलाके की एक इंफेंट्री से यह कारतूस के खोके चोरी किये गये थे लेकिन इंफेंट्री ने भारी मात्रा में कारतूस चोरी होने के बावजूद भी इसकी रिपोर्ट कैंट थाने में नहीं लिखवाई थी। दो दिन पूर्व 21 इंफेंट्री मद्रास के एक कैप्टन ने कैंट थाने में शिकायत दी है कि उनके यहां से आठ हजार से कुछ ज्यादा इंसास के खाली खोके मिस हो रखे हैं। हैरानी वाली बात है कि हथियार के खोके कैसे इंफेंट्री से मिस हो गये यह बडा चिंता का विषय है और देश की सुरक्षा से मामला जुडा होने के कारण खुफ्िया एजेंसियों व सेना अफ्सरों को भी यह राज तलाशना होगा कि आखिरकार 21वीं इंफेंट्री से कैसे कारतूस के खोके गायब हुए? सवाल यह भी उठ रहा है कि इंफेंट्री ने सिर्फ खाली कारतूसों के गायब होने की शिकायत दर्ज कराई है जबकि 119 एसएलआर के कारतूस किसके हैं और कहां से चोरी किये गये यह एक बडा जांच का विषय है। इतनी बडी मात्रा में घातक हथियार के खाली कारतूस व जिंदा कारतूस बरामद होने के बाद भी पकडे गये गैंग को पुलिस कस्टडी रिमांड पर न लेना पुलिस अफ्सरों की खामोशी पर भी कई सवाल खडे कर रहा है? अगर इन कारतूसों के गायब होने का सारा इतिहास उजागर न हुआ तो यह सेना के लिए आने वाले समय में काफी घातक हो सकता है?

कुछ आकर्षक हेयर स्टाइल

त्यौहारों का मौसम शुरू होने वाला है, ऐसे में महिलाओं की तैयारी तो पहले से ही शुरू हो जाती है। वैसे तो महिलाएं हमेशा ही सुंदर व प्रेजेंटेबल दिखने की चाह रखती हैं लेकिन त्यौहारों के मौसम में उनकी यह इच्छा प्रबल हो जाती है। इसलिए वह ड्रेस से लेकर मेकअप तक हर बात का खास ध्यान रखती हैं। लेकिन सिर्फ ड्रेस या मेकअप करने से बात नहीं बनने वाली। महिलाओं के लिए जो सबसे बड़ा झंझट होता है, वह है हेयरस्टाइल। अगर हेयरस्टाइल अच्छा न हो तो उनकी सारी मेहनत बेकार हो जाती है। दरअसल, एक हेयरस्टाइल आपके लुक को कंप्लीट व कॉम्पलिमेंट करने का काम करता है। तो चलिए जानते हैं त्यौहारों के सीजन में कुछ आसान व बेहतरीन हेयरस्टाइल के बारे में-

ब्रेडिंग: कुछ समय पहले तक ब्रेडिंग को काफी बोरिंग माना जाता था लेकिन अगर इसे सही तरीके से बनाया जाए तो यह काफी इंटरस्टिंग व स्टाइलिश लगती है। आप अपनी मनपंसद अनुसार फिशटेल ब्रेड, मिल्कमेड ब्रेड, फ्रेंच ब्रेड या वॉटरफॉल ब्रेड कोई भी हेयर स्टाइल चुन सकती हैं। फिशटेल ब्रेड बनाने के लिए बाल के दो भाग किए जाते हैं। इस हेयर स्टाइल को बनाने वाली महिला को सभी टुकड़ों पर ध्यान रखने की जरूरत नहीं होती। बालों की दो मुख्य लटों के तालों में मिश्रण करते रहना होता है। इसे बनाने में अधिक समय जरूर लगता है लेकिन बनने के बाद यह बहुत ही खूबसूरत व क्लासी लगता है। मिल्कमेड ब्रेड स्टाइल में डाउनवर्ड मिल्कमेड ब्रेड बनाई जाती है। इसमें बालों को तीन-चार भागों में बांट कर फ्रेंच ब्रेडिंग बनाया जाता है। ब्रेडस को बॉबी पिन द्वारा पिनअप किया जाता है। वहीं फ्रेंच ब्रेड भी बहुत ही सुंदर व क्लासी लगती है। इसे बनाने के लिए बालों को तीन भाग में बांट कर केन्द्र पर इसे क्रॉस करते हुए नियमित रूप से चोटी की कुछ ब्रेडस बनाई जाती है। इस प्रकार के ब्रेड से एक वरसेटाइल लुक मिलता है। वॉटरफॉल ब्रेड में आधे बालों के ब्रेड्स बनाए जाते हैं और बाकी बालों को खुला छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार की चोटी को बनाने के लिए पहले नियमित रूप से फ्रेंच चोटी बनाई जाती है। ब्रेडिंग की सबसे बड़ी खासियत यही है कि यह इंडियन के साथ-साथ वेस्टर्न और इंडो-वेस्टर्न आउटफिट्स के साथ भी अच्छी लगती है।

साइड व डबल बन जूड़ा: साइड या डबल बन जूड़ा आपको ट्रेंडी लुक देने के साथ-साथ काफी कंफर्टेबल भी रहता है। साइड बन में पहले बालों को कर्ल किया जाता है तथा उससे साइड में बन बनाया जाता है। वहीं डबल बन जूड़ा बनाने के लिए बालों को दो भागों मे बांट दें। एक भाग के बालों को छोटा बन डाल कर पोनी बनाएं। दूसरे भाग के बालों का भी छोटा बन डाल कर पहली पोनी से थोड़ी उपर की ओर पोनी बनाएं। पहली पोनी को रोल कर साइड से पिन लगा कर सैट करें। दूसरी पोनी को पहली पोनी के रोल से नीचे लाकर ऊपर लाएं और पिन से सैट करें। बालों के बीच में जहां थोड़ी जगह दिखती हो, फैंसी मोतीनुमा पिन से जूड़ा सजाएं।

पोनीटेल: यह हेयर स्टाइल सुनने में बहुत ही आम लगता है लेकिन यही एक ऐसा ट्रेडिशनल हेयर स्टाइल है जिसे अलग-अलग तरीकों से बांधकर हर दिन एक नया लुक आजमाया जा सकता है। पोनीटेल बांधने से पहले अपनी बालों की टाइप का अवश्य ध्यान रखें। अगर आपके बाल सीधे हैं तो बिल्कुल हाई पोनीटेल बांधें। वहीं अगर आपके बाल कर्ली हैं तो साइड में पोनीटेल आपको बिल्कुल चिक वाला लुक देगा। साइड पोनीटेल बांधते समय बालों को लंबा दिखाने के लिए इसे बिल्कुल ढीला बांधें।

लूज हेयर: आजकल लूज हेयर का भी काफी चलन है। इसमें आप स्ट्रेटनिंग व कर्लिंग ट्राई कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त अगर आप थोड़ा डिफरेंट लुक चाहती हैं तो आगे के बालों को ट्विटस करके पिनअप करें। आगे के बालों में हेयर एसेसरीज आपके लुक को और भी सुदंर बना देगी। साथ ही पीछे के बालों को कर्ल करके लूज छोड़ दीजिए। अगर कर्ल खुल भी जाएंगे तो भी बालों को वालयूम ही देंगे। यंग गर्ल्स व नवविवाहित स्त्रियों पर यह लुक बहुत ही जंचता है।

शादियों के इस खुशनुमा मौसम में यह है ज्वैलरी का नया ट्रेंड

फैशन के गलियारों में बदलते ट्रेंड का असर हमारे दैनिक जीवन पर भी पड़ता है। खासतौर से, महिलाएं तो हमेशा ही लेटेस्ट ट्रेंड पहनने को बेताब रहती हैं। फिर चाहे बात कपड़ों की हो या ज्वैलरी की। महिलाएं हमेशा ही फैशनेबल दिखने की चाहत रखती हैं। इतना ही नहीं, घर से लेकर ऑफिस व पार्टी तक वह ऐसा कुछ पहनना चाहती हैं जो उन्हें दूसरों से हटकर दिखाए। तो आईए जानते हैं ऐसी ही कुछ ज्वैलरी के बारे में, जो इस समय काफी चलन में हैं-

ईयरिंग्स: अगर बात ईयरिंग्स की हो तो हूप ईयरिंग्स काफी चलन में हैं। वैसे हूप ईयरिंग्स का क्रेज पिछले साल भी काफी देखने को मिला था और इसकी पॉपुलैरिटी को देखते हुए इस साल भी यह ट्रेंड से आउट नहीं हुआ। इतना ही नहीं, यह घर से लेकर ऑफिस तक एक अच्छा ऑप्शन साबित हो सकते हैं हालांकि पार्टी में इन्हें अवॉइड करना ही बेहतर रहता है। इसके अतिरिक्त शैंडलीर ईयरिंग्स शाम की पार्टी के लिए एकदम परफेक्ट रहते हैं। यह लंबे हैंगिंग शिमरी स्टोंस युक्त ईयरिंग्स होते हैं। इनके रॉयल लुक को देखते हुए ही इन्हें पार्टीवियर माना जाता है। अगर आप बेहद सिंपल व एलीगेंट दिखना चाहती हैं तो आपके लिए स्टड विद पर्ल्स एक अच्छा ऑप्शन है। यह स्टड कभी भी फैशन से आउट नहीं होते। इस साल भी यह ट्रेंड में बने हुए हैं। इन सबके ईयरकफ्स को भी इन दिनों काफी तवज्जो दी जा रही है। ईयरकफ्स वैसे तो 1990 में ट्रेंड में आए थे लेकिन पिछले साल से इन्हें फिर से काफी पसंद किया जा रहा है। साथ ही अब ऐसे ईयरकफ्स डिजाइन किए जा रहे हैं, जिन्हें पहनने के लिए आपको पियसिंग करवाने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही यह आपके पूरे कानों को कवर करते हैं।

ब्रेसलेट: इन दिनों ऐसे ब्रेसलेट का चलन है, जो सिल्वर मेटल के बने हों। साथ ही आजकल बेसिक मैटीरियल में लेदर को भी एड किया जा रहा है। अगर बात डिजाइन की हो तो इसमें इंडियन, टर्किश व ग्रीक लुक को तवज्जो दी जा रही है। इन सबके अतिरिक्त इस साल क्रिस्टल्स, चेन व पतले धागे में लगे मोतियों का भी काम काफी हद तक सराहा जा रहा है।

पेंडेंट: आजकल ऐसे पेंडेंट लोगों द्वारा पसंद किए जा रहे हैं, जिनमें कलर्ड लेटर्स या नंबर्स का इस्तेमाल हो। इन नंबर्स को एक पतली गोल्ड चेन में लटकाकर पहना जा रहा है। यह वेट में हल्के होने के साथ-साथ बेहद अच्छा लुक देते हैं। इनके अतिरिक्त चोकर्स भी इन दिनों काफी ट्रेंड में हैं। इस ज्वैलरी की खासियत यह है कि यह वेट में हल्की होती है लेकिन देखने में यह काफी हैवी लुक देती है। इसलिए इन्हें डेली वियर के अतिरिक्त पार्टी में भी पहना जाता है। वहीं पार्टी लुक के लिए स्मॉल पेंडेंट के स्थान पर स्टेटमेंट पेंडेंट व नेकलेस पहनना अच्छा रहता है। अगर आपको छोटे पेंडेंट पहनना ही पसंद है तो उन्हें पार्टीवियर बनाने के लिए आप तीन-चार पेंडेंट एक साथ पहनें जिससे पेंडेंट की लेयरिंग आसानी से हो जाएं।

परफेक्ट ब्लाउज के बिना लहंगे का लुक है अधूरा

अगर इस साल आपकी शादी होने वाली है तो आपको सबसे ज्यादा चिंता अपने ब्राइडल लहंगे की होगी। लेकिन एक परफेक्ट ब्लाउज के बिना आपके लहंगे का लुक अधूरा है। ऐसे में हम आपको बता रहे हैं कुछ डिफरेंट डिजाइन्स जिन्हें आप अपने ब्राइडल ब्लाउज में ट्राई कर सकती हैं...

ऑफ शोल्डर ब्लाउज

ऑफ शोल्डर ब्लाउज का ट्रेंड वापस आ गया है और आप चाहें तो इसे केप जैसे क्रॉप टॉप के साथ कम्बाइन कर अपने प्री-वेडिंग सेलिब्रेशन्स में पहन सकती हैं। आप चाहें तो इस स्टाइल को फ्लोइ फैब्रिक, कलर्स और प्रिंट्स के साथ मिक्स ऐंड मैच कर पहन सकती हैं।

जैकेट स्टाइल ब्लाउज

आप चाहें तो अपने लहंगे के रूप जैकेट स्टाइल ब्लाउज पहन सकती हैं। आप चाहें तो हाई कॉलर वाली ओवरलैप्ड लेपल जैकेट बनवाएं या फिर वी नेक वाली जैकेट भी बनवा सकती हैं। आप इसे स्ट्रेट-फिट लहंगा या अंब्रेला-कट लहंगे के साथ पहन सकती हैं।

न्यूड ब्लाउज

इन दिनों न्यूड ब्लाउजेज भी ट्रेंड में हैं। आप चाहें तो स्किन टोन के रंग की नेट ब्लाउज लें और उसपर बारीक डिजाइन बनवा लें। जब आप इस ब्लाउज को पहनेंगी तो ऐसा लगेगा मानो वह डिजाइन आपकी स्किन से चिपका हुआ है जिससे आपका लहंगा और भी खूबसूरत हो जाएगा। आप चाहें तो लो नेक फुल स्लीव्स की ब्लाउज बनवा सकती हैं या फिर हाई नेक क्रॉप टॉप जैसी ब्लाउज।

हॉल्टर नेक ब्लाउज

सिंगर कलर की हॉल्टर नेक ब्लाउज जिसमें बेहद कम वर्क किया हुआ हो इस साल सबसे ज्यादा ट्रेंड में रहेगी। चूंकि ब्लाउज पर कम वर्क किया हुआ है इसलिए इसे आप हेवी वर्क वाले लहंगे के साथ टीमअप कर पूरे लुक को बैलेंस कर सकती हैं।

वन शोल्डर ब्लाउज

मेटैलिक कलर की वन शोल्डर, एसिमिट्रिक ब्लाउज को भी हेवी वर्क वाले लहंगे के साथ पहन सकती हैं। यह स्टाइल आपको वेडिंग डे पर डिफरेंट लुक देगा।

ये रिश्ता क्या कहलाता है में मेरे लिए कुछ नहीं बचा':प्रियंका उधवानि

अभिनेत्री प्रियंका उधवानि ने टेलीविजन धारावाहिक 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' को अलविदा कह दिया है और वह कुछ नया करने को लेकर उत्सुक हैं। वर्ष 2014 में टेलीविजन धारावाहिक में शामिल हुईं प्रियंका ने कहा, 'शो को अलविदा कहने का समय आ गया है। शो के प्रतिभावान लोगों से मैंने बहुत कुछ सीखा।''

शो छोडने़ की वजह बताते हुए उन्होंने कहा, ''कलाकार होने के नाते मैं परफार्म करना चाहती हूं। मैं सिर्फ भीड़ में शामिल होकर खड़े रहना नहीं चाहती। मुझे लगता है कि शो में मेरे लिए कुछ बचा नहीं है। कहानी अब दूसरे परिवार में स्थानांतरित हो गई है।'' उन्होंने कहा, ''यहां तक कि मेरे पति की भूमिका निभा रहे अंशुल पांडे ने भी शो छोड़ दिया। मैंने काम जारी रखा क्योंकि भावनात्मकता रूप से इससे जुड़ी थी, लेकिन अब कुछ नया करने का समय है।'' 'हमको दीवाना कर गए' की अभिनेत्री ने कहा, ''मैं शो में मुख्य भूमिकाएं या फिर मजबूत किरदार निभाना चाहती हूं।''

फिल्म ईकाइयों के विलय की योजना बना रहा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

नयी दिल्ली। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की अपनी विभिन्न फिल्म ईकाइयों का विलय करने की योजना है। एक अधिकारी ने बताया कि इस कदम का मकसद क्षमता बढ़ाने के लिए अपने संसाधनों को संयोजित करना है। इस कदम को मंत्रालय में चल रही पुनर्गठन की प्रक्रिया के हिस्से के तौर पर देखा जा रहा है। । पिछले महीने मंत्रालय ने अपने तीन विभागों क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय (डीएफपी), गीत एवं नाटक प्रभाग (डीएफपी) और विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय (डीएवीपी) का विलय कर दिया था। अधिकारी ने बताया कि अब मंत्रालय राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी), भारतीय बाल फिल्म सोसायटी (सीएफएसआई), फिल्म महोत्सव निदेशालय (डीआईएफएफ) और भारतीय फिल्म प्रभाग का विलय करने की योजना बना रहा है।

सांध्य दैनिक
क्राइम स्टोरी
website: www.crimestory.in
देहरादून
शनिवार, 13 जनवरी 2018

देशभर के साथ तीर्थनगरी मे भी मची

लोहड़ी पर्व की धूम

ऋषिकेश। देश भर के साथ अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त धार्मिक एवं पर्यटन नगरी ऋषिकेश मे भी खुशियों और उल्लास के रूप मे मनाया जाने लोहड़ी का पर्व बेहद धूमधाम के साथ मनाया गया। लोहड़ी पर्व की धमक अब सिर्फ पंजाब की वादियों तक ही सीमित नही रही है बल्कि पूरे देश मे लोहड़ी की धूम मची हुई है। इसकी बानगी आज पर्व पर उत्तराखंड की देवभूमि मे भी देखनें को मिली।शहर मे विभिन्न स्थानों पर उत्साह और उमंग के साथ लोगों ने सांझी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सामुहिक रूप से लोहड़ी का पर्व मनाया। निर्मल आश्रम मे महंत राम सिंह, महाराज व संत जौध सिंह महाराज ने संयुक्त रूप से लोहड़ी पूजन कर श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया। गुरूद्वारा हेमकुण्ट साहिब मैनेजमेंट ट्रस्ट मे भी पर्व बेहद उल्लास के साथ मनाया गया। देवभूमि उत्तरांचल उधोग व्यापार मण्डल ने प्रांतीय अध्यक्ष राजकुमार अग्रवाल के दिशा निर्देशन मे त्रिवेणी घाट स्थित गांधी स्तम्भ के बाहर विगत् वर्षो की भांति इस वर्ष भी धूमधाम के साथ त्यौहार मनाकर गरीबों और जरूरतमंदों को कम्बल वितरित किए। लोहड़ी पर्व का बड़ा आकर्षण पंजाबी महासभा के तत्वावधान मे तिलक रोड़ स्थित पंजाबी क्वाटरों मे आयोजित किया गया कार्यक्रम रहा जिसमे शहर के तमाम गणमान्य नागरिकों ने सम्मलित होकर बेहद गर्मजोशी से एक दूसरे को बधाई दी। इस अवसर पर पालिकाध्यक्ष दीप शर्मा, पंजाबी महासभा के जिलाध्यक्ष प्रदीप कोहली,व्यापारी नेता जयदत्त शर्मा, मदन नागपाल, विनोद शर्मा, हरीश धींगड़ा, अशोक मनचंदा, कीमतीलाल चावला,सुभाष कोहली,अनिता बहल,स्नेहलता शर्मा, सरोज डिमरी,स्वीटी कोहली,गीता मनचंदा, सीमा शर्मा सहित बड़ी संख्या मे क्षेत्रवासी मौजूद रहे।

क्यों मनाई जाती है लोहड़ी

एक लोक प्रचलित कहानी के अनुसार सुंदरी और मुंदरी नाम की दो बहनें थीं। बचपन में ही पिता की मौत हो जाने के कारण ये दोनों अपने चाचा के पास आ गईं। लेकिन जालिम चाचा ने दोनों को एक जमींदार को बेचने की सोची। ये बात जैसे ही दुल्ला भट्टी नाम के डाकू को पता चली तो उसने चाचा के चंगुल से दोनों लड़कियों को छुड़ाया। दोनों को दुल्ला भट्टी ने अपने यहां शरण दी। उनका लालन पोषण किया।जब लड़कियां बड़ी हो गई तो उसने दो अच्छे वर ढूंढकर उनकी शादी करने का सोचा। शादी बहुत जल्दी-जल्दी में की गई। दुल्ला भट्टी ने आग जलाई और उसी आग के आसपास फेरे लेते हुए दोनों लड़कियों की शादी कर दी गई। कहते हैं दूल्हा भट्टी के पास दोनों बहनों को देने के लिए कुछ नहीं था इसलिए उसने दोनों की झोली में गुड़ डाला और उन्हें विदा कर दिया। इसी कहानी को आधार मानते हुए लोहड़ी का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन पंजाब में पतंगबाजी करने का भी चलन है।

- शहर मे विभिन्न स्थानों पर हुआ लोहड़ी पूजन
- पंजाबी महासभा के तत्वावधान मे आयोजित कार्यक्रम साबित हुआ बड़ा आकर्षण

लोहड़ी एवं मकर सक्रांति के पर्व को लेकर ग्राहकों से खिला बाजार

ऋषिकेश। लोहड़ी पर्व पर आज शहर का बाजार खूब चहका।मकर संक्रांति पर्व की तैयारियां अब जोरों पर हैं। घर-घर में महिलाएं परंपरागत तिल और गुड़ के लड्डू बनाने में व्यस्त हैं तो वहीं शनिवार को शहर के बाजार गुलजार नजर आए। संक्रांति के दिन सुहागन महिलाएं एक-दूसरे को मिट्टी के सुघड़ (वाण) देंगी। सुघड़ में खिचड़ी, गन्ना, गाजर, हरा छोड़, बेर आदि सामग्री भरी जाती है। मंदिर में महिलाएं सुघड़ का आदान-प्रदान कर एक-दूसरे को हल्दी-कुंकू लगाकर वस्तु का दान करेंगी।

रेलवे रोड पर गजक, मूंगफली व अन्य जरूरी सामान लेने के लिए दुकानों पर लोगों की भीड़ लगी रही। इन सबके बीच खुशियों के त्यौहार लोहड़ी पर्व के लिए भी आज लोगों ने बाजारों मे जमकर खरीदारी की जिसके चलते मंदे से परेशान दुकानदारों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

वीकेंड पर पड़े त्यौहारों से

वाहनों की रेलमपेल मे जाम से जूझी तीर्थनगरी

ऋषिकेश। वीकेंड पर पड़े लोहड़ी और मकर सक्रांति पर्व पर श्रद्धालुओं की जबरदस्त भीड़ तीर्थ नगरी मे उमड़ी जिसके चलते आज दिनभर शहर मे जाम की स्थिति बनी रही।

शहर के बाशिंदो को जाम की समस्या से निजात नहीं मिल रही है। ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब लोगों को जाम के चलते परेशानी का सामना न करना पड़ता हो। खासतौर पर त्यौहारों के दौरान अक्सर स्थिति बेकाबू हो जाती है। शनिवार को भी धर्म नगरी मे कुछ ऐसे ही हालात रहे। दोपहर में श्यामपुर से लेकर मुनि की रेती तक करीब एक घंटे तगड़ा जाम लग गया। जिससे दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गई। देर तक यातायात बाधित होने के चलते पैदल तक चलना मुश्किल हो गया। पुलिस और होमगार्ड के जवान वाहनों को निकालने में लगे रहे। काफी देर बाद यातायात सामान्य हो सका।उल्लेखनीय यह भी है कि शहर में जाम की समस्या नई नहीं है। शायद ही ऐसा कोई दिन जाता हो जब जाम न लगता हो। बाजार में तो जाम लगना आम बात है। शनिवार को भी लोगों को जाम के चलते भारी दिक्कत का सामना करना पड़ा। दोपहर में बाजार में भारी जाम लग गया। जिससे दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गई। दोपहिया वाहन चालक यातायात बाधित होने से

बिलबिलाते रहे। जाम से कैसे छुटकारा मिले इसके लिए लोगों ने गलियों से वाहन निकालने का प्रयास किया लेकिन वह भी व्यर्थ रहा। गलियों में इस कदर जाम लगा हुआ था कि पैदल चलना भी दूभर हो रहा था। पुलिस और होमगार्ड के जवान जाम खुलवाने में लगे रहे। काफी देर की मशक्कत के बाद जाम से निजात मिल सकी।

सम्पादकीय

निकाय चुनाव में होगी अग्निपरीक्षा

उत्तराखण्ड में होने वाले निकाय चुनाव को देखते हुए सभी राजनीतिक दलों ने अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं और छोटे से लेकर बडा दल भी बाजी मारने के लिए मैदान में उतरने को आतूर हो रखा है। सरकार ने नगर निगम व नगर पालिका में वार्डों का सीमा विस्तार कर नया खाका तैयार किया तो उससे चुनाव लडने वाले प्रत्याशियों में हड़कम्प मंच गया क्योंकि कई इलाकों में कुछ क्षेत्र बडा दिये गये तो कुछ इलाकों से क्षेत्रों को गायब कर दिया गया। पूर्व सीमांकन को लेकर सभी राजनीतिक दल के नेता अपना चुनाव प्रचार लम्बे समय से करने के लिए आगे आ रखे थे लेकिन सरकार का नया सीमा विस्तार देखकर सैकडों प्रत्याशियों के पैरों तले जमीन खिसक गई कि जिस इलाके में उन्होंने कभी दस्तक भी नहीं दी उस वार्ड को उनके यहां जोड दिया गया तो उससे उनकी जीत का सपना कहीं टूट न जाये। सरकार के इस सीमा विस्तार की गूंज उच्च न्यायालय में भी गूंजी जिसके बाद न्यायालय ने संज्ञान लेते हुए सरकार से 16 फरवरी तक जवाब मांगा है। सरकार के सामने अब अदालत का आदेश गले की फांस बना हुआ है और उसे यह डर है कि अगर कहीं अदालत ने सीमा विस्तार को लेकर सरकार को कोई झटका दिया तो उनका सारा अंकगणित गडबडा जायेगा और उनके प्रत्याशियों को हार का सामना भी देखना पड सकता है। उत्तराखण्ड में नगर निगम व नगर पालिका के होने वाले चुनाव में सबसे ज्यादा अग्निपरीक्षा भाजपा व कांग्रेस की होनी मानी जा रही है। दोनो बडे राजनीतिक दल इसी मिशन में लगे हुए हैं कि किसी तरह से उनका दल इन चुनाव में बाजी मार जाये जिससे 2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव का सारा दर्पण सामने आ जायेगा। प्रदेश में होने वाले नगर निगम व नगर पालिका चुनाव में कांग्रेस व भाजपा पार्टी के बीच मुख्य मुकाबला देखने को मिलेगा और यही कारण है कि दोनो राजनीतिक दल इन चुनाव में जीत का बिगुल बजाने के लिए अपनी टीम के साथ आगे खडे हुए दिखाई दे रहे हैं। निकाय चुनाव में भाजपा व कांग्रेस के बीच बडा मुकाबला होना है और इन चुनाव से 2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव की झलक भी कहीं न कहीं देखने को मिल सकती है इसको लेकर दोनो राजनीतिक दल अपनी-अपनी तैयारियों में लगी हुई है। सबसे बडी अग्निपरीक्षा उत्तराखण्ड सरकार के मुखिया त्रिवेन्द्र सिंह रावत की होनी है जिनकी अगुवाई में पार्टी के प्रत्याशी पहला चुनाव लडने के लिए मैदान में उतरेंगे। अगर भाजपा प्रत्याशियों ने चुनाव में अच्छे परिणाम दिखाई तो उससे दिल्ली हाईकमान के सामने त्रिवेन्द्र सिंह रावत का सिक्का बुलंद होगा और उनकी लम्बे समय तक ताजपोशी बरकरार रह सकती है और अगर इन चुनाव में भाजपा को नुकसान हुआ तो उसके बाद सरकार के मुखिया के विरोधी दिल्ली में हाईकमान के सामने बवाल मचा सकते हैं कि 2019 में होने वाले लोकसभा चुनाव में अगर प्रदेश के अन्दर पार्टी को जीत हासिल करनी है तो राज्य की कमान किसी और राजनेता के हाथ में सौंपी जाये। उधर निकाय चुनाव में कांग्रेस के नये प्रदेश अध्यक्ष प्रीतम सिंह की भी अग्निपरीक्षा होनी तय मानी जा रही है। प्रीतम सिंह को अगर पार्टी में अपना इकबाल बुलंद करना है तो उन्हें पहले निकाय चुनाव में अपने प्रत्याशियों को अधिक से अधिक जीताने का जज्बा दिखाना होगा। अगर कांग्रेस के प्रत्याशी चुनाव में अपना इकबाल बुलंद नहीं कर पाये तो सबसे ज्यादा संकट व आरोप का दंश कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष प्रीतम सिंह को ही झेलना पडेगा। इन चुनाव में उक्रांद का वजूद क्या रहेगा इस पर सबकी नजर रहेगी हालांकि जिस तरह से उक्रांद के अन्दर हमेशा से ही बिखराव देखने को मिल रहा है उससे यही आशंका पनप रही है कि नगर निगम व नगर पालिका के चुनाव में कोई खास जलवा नहीं दिखा पायेगी।

योगी के खिलाफ टिप्पणियां कांग्रेस की हताशा: श्रीकांत शर्मा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा ने कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के खिलाफकांग्रेस की टिप्पणियां उसकी हताशा को दर्शाती हैं। कर्नाटक विधानसभा चुनावों के क्रम में कांग्रेस ने एक वीडियो के जरिए योगी पर निशाना साधा है। यह वीडियो एक टिवटर हैंडल (रेसिपी फार डिजास्टर) से ट्वीट किया गया है। शर्मा इसी वीडियो के परिप्रेक्ष्य में प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे। शर्मा ने कहा, श्उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विरुद्ध कांग्रेस की आपत्तिजनक टिप्पणियां और सोशल मीडिया पर निचले दर्जे का दुष्प्रचार ''इटली कांग्रेस'' की हताशा है। ये अशोभनीय टिप्पणियां दर्शाती हैं कि कांग्रेस ने हार मान ली है और उसे हर तरफअपनी हार नजर आ रही है।श् उन्होंने कहा, श्अभी कर्नाटक के आगामी चुनाव का प्रचार ही शुरू हुआ है और पहले दौर में उसने घुटने टेक दिए हैं। कमीशन, भ्रष्टाचार और कुशासन के लिए कुख्यात कांग्रेस अब

मानसिक दिवालिएपन का शिकार हो गई है। शर्मा ने कहा कि भाजपा के नेतृत्व में देश की जनता ने पहले कांग्रेस को केंद्र से खदेड़ा और फिर राज्यों से खदेड़ते-खदेड़ते चार राज्यों में समेट दिया है। अब कर्नाटक से कांग्रेस और उसके विकास विरोधी शासन की विदाई तय है। कांग्रेस ने एक संत, संन्यासी तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी पर जो अभद्र टिप्पणी की है, उसका कर्नाटक की जनता चुनावों में मुंहतोड़ जवाब देगी। शर्मा, जो राज्य सरकार के प्रवक्ता भी हैं, ने कहा कि बंटवारे की राजनीति करने वाली कांग्रेस को केसरिया से बड़ी आपत्ति है। यह रंग शौर्य और त्याग का प्रतीक है, लेकिन कांग्रेस न शौर्य का महत्व समझती है और न त्याग की कीमत जानती है। उन्होंने कहा कि हिन्दू आतंकवाद का शिगूफा छोड़कर हिंदुत्व तथा हिन्दुओं को बदनाम करना, राम सेतु तथा प्रभु राम का अस्तित्व नकारना, भारत मां के टुकड़े करने वालों के समर्थन में रैली करना, देश की संस्कृति, सांस्कृतिक धरोहरों, महापुरुषों तथा साधु-संतों का अपमान करना और पाकिस्तान के विरुद्ध सर्जिकल स्ट्राइक कर मां भारती का गौरव बढ़ाने वाले जांबाज सैनिकों के पराक्रम पर सवाल खड़े करना कांग्रेस की मानसिकता है।

नकल विहीन परीक्षा के लिए खुद को तैयार रखें विश्वविद्यालय: योगी

जौनपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विद्यार्थी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के लिए और विश्वविद्यालय नकल विहीन परीक्षा के लिए खुद को तैयार रखें। मुख्यमंत्री ने वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर आयोजित 'राष्ट्रीय युवा दिवस समारोह' में कहा कि सच्चा युवा वही है जो पलायन करने के बजाए चुनौतियों को स्वीकार कर उनका सामना करे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के लिए और विश्वविद्यालय नकल विहीन परीक्षा के लिए अपने को तैयार रखें। शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान करने के साथ ही उनके हितों को ध्यान में रखते हुए विकास में भी योगदान करें। यही स्वामी विवेकानंद के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का लाभ प्रदेश के युवक लाखों की संख्या में उठा चुके हैं। विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षण संस्थानों को भी इसमें अपना योगदान सुनिश्चित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार की श्वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्टश् योजना का मकसद क्षेत्रीय उत्पादों को बढ़ावा देना है। क्षेत्र विशेष के परम्परागत उत्पादों को मंच प्रदान कर ही उनका आर्थिक विकास सम्भव हो सकेगा। मुख्यमंत्री ने वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह भौतिकीय विज्ञान अध्ययन एवं शोध संस्थान भवन एवं अशोक सिंहल भारतीय परंपरागत विज्ञान एवं तकनीकी संस्थान भवन का शिलान्यास किया। साथ ही, विश्वविद्यालय के संगोष्ठी भवन का नामकरण पूज्य महंत अवैद्यनाथ जी के नाम पर किया। इसके अलावा शहीद विनय त्रिपाठी की पत्नी को प्रदेश सरकार की तरफ से पांच लाख रुपये का चेक प्रदान किया।

हे अतिथि! तुम कब जाओगे

'अतिथि' शब्द में ही उसका अर्थ निहित है। यानी जो बिना किसी तिथि, वार अथवा समय की सूचना दिये आ जाये, उसे अतिथि कहा जाता है। और ऐसे ही अतिथियों को हमारे प्यारे देश में देवतुल्य समझा जाता था। पर आजकल यदि कोई बिना तिथि या समय तो छोड़ो, बिना पूछे भी आ जाये तो वह खटकने लगता है। अलबत्ता तो कोई किसी के घर जाकर ही राजी नहीं है। ना ही किसी के पास मिलने-जुलने, जाने का टाइम है, ना ख्वाहिश। फिर भी यदि कोई भूला-भटका आ जाये तो कोई उसे घास नहीं डालता। ये अक्ल का कच्चा है, खाली-ठाली है, और कोई काम नहीं है इसे, बताकर आना चाहिये था, आदि जुमले बोलकर हम अपनी भड़ास निकालते हैं। अब तो किसी के घर जाना हो तो बाकायदा अपायंटमेंट लेकर जाना पड़ता है। गोया किसी से मिलने नहीं जा रहे, बल्कि डॉक्टर या वकील से मशविरा करने जा रहे हैं। विवाह, सगाई, जन्मदिवस और जीने-मरने के सभी समारोह किसी क्लब, धर्मशाला अथवा बेंकेट हॉल में होने लग गये। इसलिये किसी के घर जाने के सभी बहाने भी लुप्त होते जा रहे हैं। बिना किसी काम या मजबूरी के किसी के घर जाना वर्जित-सा हो गया है।

वे दिन अतीत हो गये जब किसी मित्र-प्यारे के घर सिर्फ चाय पीने या गप्पबाजी करने चले जाया करते। अब तो किसी के घर कोई बुलावा देने भी जाओ तो सुनना पड़ता है-एसएमएस भेज देते या व्हाट्सएप कर देते। वे दिन तो लद ही गये जब अपने बच्चों की शादियों में किसी घनिष्ठ को जाकर बुलावा नहीं देते तो उलाहने मिला करते कि सिर्फ कार्ड भेज दिया या फोन कर दिया, बुलाने तो आये ही नहीं। अब हम ई-कार्ड के युग में पहुंच गये हैं। मतलब साफ है कि चिड़ियों की तरह अब कार्ड की नस्ल खतरे में है। ज़माना तेज़ी से बदल रहा है। पहले मेहमान आते थे तो रामरमी के बाद घरवालों का हालचाल पूछते थे या कोई आपबीती सुनाते थे पर अब घरों में घुसते ही मेहमान चार्जर मांगते हैं और वाइफाई कोड पूछते हैं। इतना ही नहीं, चाय-पानी पीते हुए भी हमारे मेहमान अब मजनूं की तरह मोबाइल की गलियों में खोये से रहते हैं और मोबाइल पर नज़रें गड़ाये बैठे रहते हैं, मानो उन्हें कोई गड़ा हुआ खजाना मिलने वाला है।

साख पर न आने पाये आंच

समाज के विभिन्न क्षेत्रों से कार्यस्थल पर यौन शोषण के बारे में अक्सर शिकायतें मिलती रहती हैं और ऐसी घटनाओं की रोकथाम तथा इनसे सख्ती से निपटने के लिये कानून भी है। लेकिन जब म.प्र. उच्च न्यायालय के प्रशासनिक न्यायाधीश के खिलाफ अधीनस्थ न्यायपालिका की महिला सदस्य ने ऐसे आरोप लगाते हुए 2014 में पद से इस्तीफा दिया तो निश्चित ही यह एक गंभीर मामला था। परंतु उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को पद से हटाने के लिये दायर याचिका में लगाये गये आरोपों की जांच के लिये गठित समिति ने जब यौन उत्पीड़न के आरोपों को सही नहीं पाया तो चर्चा होना स्वाभाविक है। वैसे तो उच्च न्यायालय से लेकर उच्चतम न्यायालय तक कई न्यायाधीशों के खिलाफ महाभियोग चलाने के प्रयास हो चुके हैं लेकिन संसदीय इतिहास में पहली बार 1993 में किसी न्यायाधीश को पद से हटाने के लिये लोकसभा में एक प्रस्ताव पेश किया गया था। यह मामला उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति वी. रामास्वामी का था, जिन्हें भ्रष्टाचार के आरोप में पद से हटाने की कार्यवाही लोकसभा में हुई लेकिन यह प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। इसके बाद अगस्त 2011 में कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सौमित्र सेन को भ्रष्टाचार के आरोप में पद से हटाने के लिये राज्यसभा में पहली बार ऐसे प्रस्ताव पर बहस हुई और यह पारित भी हो गया। लेकिन लोकसभा में इस पर चर्चा होने से पहले ही उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इसी तरह, सिक्किम उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पी. दिनाकरण को भी महाभियोग की कार्यवाही के माध्यम से पद से हटाने के लिये राज्यसभा के सभापति को याचिका दी गयी थी। इस मामले में आरोप भी निर्धारित हुए लेकिन उन्होंने जुलाई 2011 में पद से इस्तीफा दे दिया। इसके अलावा, तेलंगाना एवं आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सी. वी. नागार्जुन रेड्डी पर निचली अदालत में एक दलित न्यायाधीश का उत्पीड़न करने और गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जे. बी. पार्दीवाला द्वारा अपने एक फैसले में की गयी टिप्पणी को लेकर उनके खिलाफ भी महाभियोग चलाने के अनुरोध के साथ राज्यसभा के सभापति के समक्ष याचिका दायर की जा चुकी है। हालांकि न्यायमूर्ति पार्दीवाला ने बाद में इस टिप्पणी को फैसले से हटा दिया। न्यायपालिका में ही कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की कथित घटना को लेकर राज्यसभा के सदस्यों ने अप्रैल, 2015 में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के पीठासीन न्यायाधीश एस. के. गंगले पर महाभियोग चलाने के लिये याचिका दायर की थी। संविधान के प्रावधानों के तहत किसी न्यायाधीश को महाभियोग की प्रक्रिया के माध्यम से ही पद से हटाया जा सकता है। इसके लिये आवश्यक है कि पहले न्यायाधीश के खिलाफ आरोपों की जांच करायी जाये। फिर संबंधित सदन में उन्हें पद से हटाने की प्रक्रिया शुरू की जाये। राज्यसभा के तत्कालीन सभापति हामिद अंसारी ने प्रधान न्यायाधीश की सलाह से इस याचिका में लगाये गये आरोपों की जांच के लिये तीन सदस्यीय समिति गठित की। इस समिति की रिपोर्ट के आधार पर ही आगे कार्यवाही हो सकती है। यौन उत्पीड़न के आरोपों की जांच के लिये उच्चतम न्यायालय की न्यायाधीश आर. भानुमति की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय समिति गठित की गयी थी। इस समिति को न्यायमूर्ति गंगले के खिलाफ चार आरोपों की जांच कर अपनी रिपोर्ट राज्यसभा को सौंपनी थी। समिति की रिपोर्ट पिछले महीने सदन के पटल पर रखी गयी, जिसके अनुसार आरोप संदेह से परे सही नहीं पाये गये। हां, न्यायाधीश के तबादले के संबंध में समिति ने कहा कि महिला न्यायाधीश का उनके पुत्र के 12वीं कक्षा के सत्र के बीच में तबादला नहीं किया जाना चाहिए था। दूसरी ओर सिर्फ जिला न्यायाधीश कमल सिंह ठाकुर की सिफारिश पर ऐसा करना न्यायोचित नहीं था। समिति ने कहा कि उसकी राय में यह दण्डात्मक कदम था और चूंकि गलत कारणों से ऐसा किया गया था, इसलिए उनके पास इस्तीफा देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। ऐसी स्थिति में न्याय के हित में होगा कि उसे फिर से सेवा में बहाल किया जाये, यदि वह इसके लिये तैयार हों। उच्चतर न्यायपालिका के सदस्यों पर भ्रष्टाचार, कदाचार, पद के दुरुपयोग या फिर कार्यस्थल पर यौन शोषण के आरोप लगने और इनके आधार पर ही उन्हें पद से हटाने के लिये लोकसभा अध्यक्ष अथवा राज्यसभा के सभापति के पास याचिका दायर होने से निश्चित ही न्यायपालिका की छवि पर असर पड़ता है। इस तरह के आरोपों और ऐसी कार्यवाही से बचने के उपाय पर विचार की आवश्यकता है। देश की जनता के प्रति न्यायपालिका के अटूट विश्वास को देखते हुए उम्मीद की जानी चाहिए कि उसे इस तरह के आरोपों का सामना नहीं करना पड़े।

बाकी है अभी मानवीय समता की लड़ाई

पुणे के निकट कोरेगांव भीमा में दो सौ साल पहले एक लड़ाई लड़ी गयी थी। इसी नववर्ष के दिन उस लड़ाई की याद को ताज़ा किया गया। देश भर से दलित नेता एकत्र हुए थे इस अवसर पर। हां, यह लड़ाई एक तरह से दलित अस्मिता की ही लड़ाई थी। दो सौ साल पहले इस मैदान में अंग्रेजों ने पेशवा बाजीराव द्वितीय की विशाल सेना को हराया था। विडंबना है कि इस कार्यक्रम के बाद हुई हिंसा ने साबित किया है कि आजादी के सात दशक बाद भी समाज में पेशवाई मानसिकता विद्यमान है। इतिहास में दिये गये वर्णन के अनुसार हज़ारों सैनिकों वाली पेशवाई सेना के सामने अंग्रेज़ों की लगभग पांच सौ सैनिकों वाली बाम्बे नेटिव इन्फ्रेंट्री ने बारह घंटे की भीषण लड़ाई लड़ी थी। इस लड़ाई के फलस्वरूप अंग्रेज़ों के पैर भारत की ज़मीन पर अच्छी तरह जम गये थे। इसलिए, उस लड़ाई का महत्व असंदिग्ध है। पर इसके महत्व का एक अध्याय यह भी है कि अंग्रेज़ों की तरफ से लड़ने वाले वे 500 सैनिक महार थे और वे यह लड़ाई पेशवाओं के हाथ होने वाले अपने जातीय अपमान के बदले के रूप में लड़ रहे थे। इतिहास साक्षी है कि पेशवाओं ने अछूत माने जाने वालों पर क्रूर सामाजिक बंधन लगाये थे। जब वे चलते थे तो रास्ता झाड़ू से बुहराते जाते थे। यह झाड़ू उन्हें अपनी कमर से बांधे रखनी पड़ती थी। दलितों को कोरेगांव भीमा की वह लड़ाई पेशवाओं से बदला लेने का अवसर लगी थी। और उन्होंने खूब बदला लिया।

पेशवा हारे अवश्य थे, पर ऐसा नहीं है कि इस हार से दलितों के प्रति कथित सवर्ण समाज का रुख बदल गया। यह रुख सिर्फ पेशवाओं तक सीमित नहीं था। सारे देश में दलितों को इस भेदभाव का शिकार होना पड़ता था। दलितों के उत्पीड़न की कहानियां देश भर में फैली हुई हैं। दक्षिण में दलित की छाया भी शरीर से छू जाने पर इन कथित उच्च वर्ण वालों का शरीर अपवित्र हो जाता था। उत्तर में दलित जूते पहन कर सवर्णों के सामने से नहीं गुज़र सकते थे। कह सकते हैं कि ये सब पुराने ज़माने की बातें थीं, पर दुर्भाग्य से, आज भी हमारा भारतीय समाज सामाजिक विषमता के इस जाल से मुक्त नहीं हो पाया है। स्थितियां बदली हैं, यह सच है। यह भी सच है कि स्वतंत्र भारत का संविधान बनाने वाला मुख्य शिल्पी एक दलित ही था। हम इस पर गर्व कर सकते हैं कि बाबा साहेब अम्बेडकर के नेतृत्व में हमारे संविधान-निर्माताओं ने देश को एक ऐसा संविधान दिया जो मनुष्यों की समानता और बंधुता की गारंटी देता है। लेकिन सच यह भी है कि सारे परिवर्तनों और सारे सुधारों के बावजूद आज भी देश में दलितों को मनुष्य न समझने वाली मानसिकता किसी न किसी रूप में जिंदा है। आज भी सिर्फ मूंछ रखने के कारण देश में कोई दलित अपमानित किया जा सकता है; आज भी कोई दलित दूल्हा गाजे-बाजे के साथ बारात ले जाने पर, तथाकथित सभ्य समाज द्वारा प्रताड़ित हो सकता है; आज भी हमारे समाज में ऐसे लोग हैं जो इस मानसिकता से उबर नहीं पाये हैं। सामाजिक एकता और सामाजिक समता की दुहाई हम अवश्य देते हैं, छुआछूत कानूनन अपराध है हमारे देश में। हमारे आज के शासकों और नेताओं में आज दलित समाज के बहुत से लोग शामिल हैं। लेकिन इस सबके बावजूद जातीयता का कैंसर हमारे राष्ट्रीय शरीर में ज़िंदा है। अक्सर उत्पात मचाता रहता है यह कैंसर। हमारे नेता, हमारे राजनीतिक दल जातीय विषमता के खिलाफ खूब बोलते हैं, पर राजनीतिक स्वार्थ के लिए जातीय समीकरणों का लाभ उठाना उन्हें कतई ग़लत नहीं लगता।

एक सच्चाई यह भी है कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिए दलित समाज को आज भी यह लग रहा है कि अपने अस्तित्व और अपनी अस्मिता की लड़ाई उसे खुद ही लड़नी है लेकिन सामाजिक विषमता की इस लड़ाई की सार्थकता और सफलता इसी में है कि सारा भारतीय समाज एक होकर एक-दूसरे के लिए यह लड़ाई लड़े। वस्तुत: यह सामूहिक और सामाजिक सोच में बदलाव की लड़ाई है। इसलिए, यह भी शर्म की ही बात है कि दलितों को आज भी यह लग रहा है कि कथित सवर्ण उन्हें समानता का अधिकार नहीं देंगे और ये यह स्वीकार नहीं कर पा रहे कि सामाजिक समानता की यह लड़ाई स्वयं को मनुष्य समझने वाले हर नागरिक की लड़ाई है। आज़ादी प्राप्त कर लेने के सत्तर साल बाद भी यदि कोरेगांव भीमा की लड़ाई का दो सौ साल का जश्न मनाना दलितों को ज़रूरी लग रहा है तो इसे एक सामाजिक विफलता के रूप में ही स्वीकारा जाना चाहिए। आदर्श स्थिति तो यह होनी चाहिए कि समूचा भारतीय समाज मिलकर यह जश्न मनाता। दो सौ साल पहले महार सैनिकों ने पेशवाओं को हराकर सामाजिक भेदभाव और अत्याचार के खिलाफ एक जीत हासिल की थी। वस्तुत: वह लड़ाई मानवीय समता की लड़ाई थी, मनुष्यता के अस्तित्व की लड़ाई थी। यह वह लड़ाई है जो अनवरत चलती रहनी चाहिए। बावजूद इसके कि एक जनवरी को पुणे के निकट विजय-पर्व मनाने सिर्फ दलित पहुंचे थे, इस बात को समझना ज़रूरी है कि मनुष्य की समता और एकता का अधिकार कोई किसी को देगा नहीं, यह विजय समाज के हर सदस्य को स्वयं अर्जित करनी होगी।

हमारे देश में, हमारे समाज में, कई-कई स्तरों पर लड़ी जा रही है यह लड़ाई। पर सच्चाई यह भी है कि अक्सर समता की यह लड़ाई आकर्षक जुमलों और नारों तक सिमट कर रह जाती है। सबका साथ, सबका विकास, का नारा हो या फिर कतार में खड़े आखिरी आदमी को आगे लाने की बात, हकीकत यह है कि अक्सर ये पैंतरे राजनीतिक स्वार्थों की कुश्ती जीतने का साधन मात्र बन जाते हैं। फिर, सवाल सिर्फ उन दलितों का ही नहीं है जो सदियों से दमित और पीड़ित हैं। वस्तुत: वे सब दलित हैं जो किसी भी प्रकार के अन्याय के शिकार हैं।

आज़ादी के सत्तर साल बाद भी यदि समाज में दलितों से अन्याय जारी है तो यह एक स्वतंत्र, जनतांत्रिक देश की सरकार और समाज, दोनों की विफलता का प्रमाण है। इस विफलता को सफलता में बदलने के लिए दलितों की अस्मिता की लड़ाई को व्यापक स्वरूप देना पड़ेगा- इसे अन्याय के खिलाफ लड़ाई बनाना पड़ेगा। सामाजिक विषमता को अमानवीय स्वरूप देने वाले पेशवा ग़लत थे, लेकिन बात वहीं रुक नहीं जाती। ग़लत वे सब भी थे जो पेशवाओं के इस अत्याचार के मौन गवाह बने हुए थे। पेशवा-प्रवृत्ति भी जीवित है और ग़लत का मूक गवाह बने रहने की प्रवृत्ति भी। जहां एक ओर दलितों की लड़ाई को नारों से ऊपर उठकर समाज के पीड़ित वर्ग के वास्तविक हितों की लड़ाई बनाना ज़रूरी है, वहीं मूक गवाहों को यह अहसास कराना भी जरूरी है कि दलितों की लड़ाई को सिर्फ उनकी लड़ाई मानना कुल मिलाकर मानवीय अधिकारों की लड़ाई के महत्व को न समझना ही होगा। दो सौ साल पहले महार सैनिकों ने पेशवा-अत्याचार के विरुद्ध एक मोर्चा जीता था, आज समाज की पेशवाई मानसिकता के खिलाफ युद्ध जीतने की आवश्यकता है। सबको मिलाकर सामाजिक विषमता को समाप्त करने की यह लड़ाई लड़नी होगी। तभी सचमुच की जीत मिलेगी।

गंदे पानी की आपूर्ति पर पूर्व विधायक राजकुमार ने किया दौरा

देहरादून। राजपुर रोड विधानसभा के पूर्व विधायक राजकुमार ने कहा है कि राजधानी के कई क्षेत्रों में गंदे पानी की आपूर्ति होने से लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है और उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि जल्द ही इस समस्या का समाधान नहीं किया गया तो जल निगम व जल संस्थान का घेराव किया जायेगा।

यहां खुडबुडा मौहल्ला, कुमार मौहल्ला, कांवली रोड एवं तिलक रोड के क्षेत्रवासियों ने जब इसकी शिकायत की तो पूर्व विधायक ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और कहा कि इन समस्याओं के समाधान का जल्द ही निदान किया जायेगा। इस अवसर पर उन्होंने एई डी एस झिग्वाण व प्रभात सेमवाल को गंदे पानी की आपूर्ति के बारे में बताया और साफतौर चेताया की जल्द ही इस समस्या का समाधान नहीं किया गया तो इसके गंभीर परिणाम सामने आयेंगें और इसके लिए जल संस्थान एवं जल निगम का घेराव किया जायेगा। एई डी एस झिंग्वाण व प्रभात सेमवाल ने शीघ्र ही कार्यवाही करने का भरोसा दिया।

इस अवसर पर निरीक्षण के दौरान क्षेत्रवासियों ने पूर्व विधायक को अन्य जन समस्याओं के बारे में अवगत कराया और कहा कि वर्तमान विधायक ने इस ओर किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की है और लोगों को परेशानियों का सामना करना पड रहा है। उनका कहना है कि यहां पर सड़कों व नालियों का काम अधूरा पडा हुआ है और सीवर का पानी नालियों पर बह रहा है और व पानी की लाईन भी आपस में मिली हुई है, जिससे गंदे पानी की आपूर्ति हो रही है। उनका कहना है कि यहां पर दोबारा सीवर लाईन व पेयजल लाईन डालने की जरूरत है जिससे परेशानी का हल निकल सकता है। इस अवसर पर क्षेत्रवासियों ने पूर्व विधायक राजकुमार को बताया कि पिछले छह माह से क्षेत्र में किसी भी प्रकार के कार्य नहीं किये गये है। विधायक राजकुमार ने आश्वस्त यिका है कि क्षेत्र में विकास कार्यों को अमलीजामा पहनाये जाने का पूरा काम किया जायेगा और जरूरत पड़ी तो इसके लिए सड़कों पर जनांदोलन किया जायेगा। इस अवसर पर क्षेत्रीय जनता के साथ ही पार्षद अशोक कोहली, सोमप्रकाश वाल्मीकी, सुंदर, रिंकू, हनी सूद, कृपाल सिंह आदि मौजूद थे।

रेसकोर्स में भव्य लोहडी मेला कल

नगर संवाददाता

देहरादून। उत्तरांचल पंजाबी महासभा के तत्वावधान में कल 14 जनवरी को रेसकोर्स स्थित दून वेल स्कूल ग्राउंड में भव्य लोहडी मेले का आयोजन किया गया है और इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।

यहां परेड ग्राउंड स्थित उत्तरांचल प्रेस क्लब में पत्रकारों से रूबरू होते हुए महासभा के लोहडी कमेटी के चेयरमैन भोला कोछर ने बताया कि लोहडी मेली में पंजाबी रंगारंग लोक संगीत कार्यक्रम भी रखा गया है जिसमें पंजाबी सत्थ कला केन्द्र चंडीगढ के करीब पचास कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगें।

उनका कहना है कि मुख्य रूप से पंजाबी फोक, आरकेस्ट्रा, मालवायी गिददा, भंगडा, झूमर, जुडडी, गत्का, जागो आदि मुख्य आकर्षण का केन्द्र होना होगा। इस अवसर पर अनेक पदाधिकारी व सदस्य मौजूद थे।

उनका कहना है कि इस कार्यक्रम में बेटी बचाओ बेटी पढाओ के अभियान से जोडकर राज्य में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कुछ प्रेरणास्त्रोत बेटियों को भी सम्मानित किया जायेगा। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत इस अवसर पर मुख्य अतिथि होंगें, जबकि कैबिनेट मंत्री प्रकाश पंत अति विशिष्ट अतिथि होंगें। इस अवसर पर महासभा के अनेक पदाधिकारी मौजूद थे।

मानवीय संबंधों स्वास्थ्य, सुंदर व संतुलित बनाना अत्यंत आवश्यक

देहरादून। आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में संतान निर्माण में माता पिता की भूमिका विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया और इस अवसर पर आचार्य आशीष दर्शनाचार्य ने कहा कि जीवन में सुखी रहने के लिए मानवीय संबंधों स्वास्थ्य, सुंदर व संतुलित बनाना अत्यंत आवश्यक है।

यहां नगर निगम प्रेक्षागृह में आयोजित कार्यशाला में उन्होंने कहा कि समाज तभी श्रेष्ठ बनेगा जब हमारी संताने श्रेष्ठ हो और श्रेष्ठ समाज ही स्वस्थ्य एवं सुंदर राष्ट्र तथा विश्व का आधार होता है और राष्ट्रीय एवं वैश्विक सुख, समृद्धि व शांति के लिए हमें बससे अधिक अपने ही घर में अपनी संतानों के श्रेष्ठ निर्माण रूपी महायश्र में अपनी आहूति समर्पित करने हेतु केन्द्रित

टीबी के मरीजों को जल्द ही सरकार से सहायता मिलने की उम्मीद

टीबी के मरीजों को सरकार 500 रुपये की मासिक सामाजिक सहायता मुहैया कराने की योजना बना रही है ताकि वे बीमारी से उबरने तक अपने लिए पोषक आहार खरीद सकें और अपना यात्रा खर्च निकाल सकें। स्वास्थ्य मंत्रालय के एक अधिकारी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि प्रस्ताव के तहत सहायता राशि मरीजों को दी जाएगी और इसका उनकी आय के स्तर से कोई लेना देना नहीं होगा। टीबी के मरीजों की संख्या करीब 25 लाख है। अधिकारी ने बताया कि व्यय वित्त समिति ने प्रस्ताव को मंजूरी दे दी और 'मिशन स्टीरिंग ग्रुप' के पास भेज दिया है। यह पहल 'टीबी उन्मूलन के लिए राष्ट्रीय रणनीतिक योजना' का हिस्सा है जिसके माध्यम से स्वास्थ्य मंत्रालय ने वर्ष 2025 तक तपेदिक के उन्मूलन का लक्ष्य रखा है। अधिकारी ने कहा, ''तपेदिक से पीड़ित करीब 25 लाख मरीजों को शीघ्र ही 500 रूपये प्रतिमाह मिलेंगे। इस राशि का मरीज की आय से कोई सरोकार नहीं होगा और यह बतौर सामाजिक सहायता दी जाएगी। मरीजों को उनके आधार नंबर और चिकित्सा दस्तावेजों के आधार पर आर्थिक मदद देने के लिए यह व्यवस्था की जाएगी।'' विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल भारत में टीबी के अनुमानित 28 लाख मामले होते हैं जिनमें से 17 लाख मामले दर्ज किए जाते हैं। अधिकारी ने कहा, ''स्वास्थ्य मंत्रालय का लक्ष्य वर्ष 2025 तक टीबी के मामलों में 90 फीसदी की कमी लाना है और साल 2030 तक इस बीमारी से होने वाली मौत के मामले 95 फीसदी घटाना है। यह कार्य 'रिवाइज्ड नेशनल टीबी कंट्रोल प्रोग्राम' के तहत किया जाएगा।''

आईआईआईटी-दिल्ली आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में शुरू करेगा एम.टेक पाठ्यक्रम

इंद्रप्रस्थ सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान-दिल्ली इस वर्ष जुलाई में शुरू हो रहे नये सत्र से 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' में विशेषज्ञता का एम.टेक पाठ्यक्रम शुरू करने जा रहा है। राष्ट्रीय राजधानी में यह पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने वाला पहला संस्थान होगा। आईआईआईटी-दिल्ली के 'इन्फोसिस सेंटर फ ो र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' के प्रमुख मयंक वत्स ने पीटीआई- बताया, ''यह पाठ्यक्रम अनुसंधान-उन्मुख होगा और 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' और 'मशीन लर्निंग' के आाधारभूत चीजों और विकास पर केंद्रित होगा।'' वत्स ने बताया कि ऐसा दिल्ली में पहली बार होगा। यह पाठ्यक्रम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) तकनीकों का उपयोग करके नवाचार और समस्या सुलझाने वाले उद्योग कैरियर के लिए स्नातक तैयार करेगा। इस पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर का होगा और इसमें 20 छात्र शामिल होंगे। वत्स ने बताया, ''इस पाठ्यक्रम के बाद, छात्र, वास्तविक

समस्याओं को हल करने के लिए मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीकों लागू करने वाली मान्य पैटर्न को लागू कर 'एआई एप्लिकेशंस' से संबंधित समस्याओं को पहचान और विश्लेषण करने में सक्षम हो सकेंगे। आईआईआईटी-दिल्ली में इस पाठ्यक्रम को दिल्ली सरकार आईआईआईटी-दिल्ली अधिनियम, 2007 के तहत शुरू करने जा रही है। इस संस्थान का चांसलर दिल्ली के उपराज्यपाल होते हैं।

प्रदेश सरकार से उठा जनता का विश्वास

नगर संवाददाता

देहरादून। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने कहा है कि केन्द्र व प्रदेश की जन विरोधी सरकारों के खिलाफबढ़ती महंगाई पर अंकुश न लगाये जाने सहित अनेक मांगों को लेकर जन अभियान चलाया जायेगा और इसकी शुरूआत 29 जनवरी को साईकिल यात्रा से की जायेगी। उनका कहना है कि प्रदेश सरकार से जनता का विश्वास उठ गया है।

यहां कांग्रेस भवन में पत्रकारों से रूबरू होते हुए उन्होंने कहा कि केन्द्र की भाजपा सरकार जबसे सत्तारूढ हुई है लगातार महंगाई में बढोत्तरी हो रही है। पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस, दाले, अनाज व आवश्यक सामग्री के साथ ही साथ प्याज के दाम आसमान छू रहे है लेकिन उन्हें नियंत्रित नहीं किया जा रहा है। यूपीए सरकार के समय प्याज के दाम बढे तो भाजपा ने यूपीए सरकार पर हमला करना शुरू कर दिया लेकिन आज उनके शासनकाल में प्याज के दाम बढ़े तो वह कम करने का नाम ही नहीं ले रहे है। उनका कहना है कि यूपीए सरकार के समय में रसोई गैस की कीमत आज दुगनी हो गई है। उनका कहना है कि नोटबंदी व जीएसटी के दुष्परिणाम अब सामने आने लगे है। इसका उदाहरण प्रकाश पांडे है। उनका कहना है कि आज राज्य सरकार से लोगों का विश्वास उठ गया है। उनका कहना है कि डीएम की घोषणा के बाद की 10 लाख रूपये सरकार देगी और दो लाख जन संगठनों से दिया और मृतक के परिजनों में एक को सरकारी नौकरी की बात कही लेकिन सरकार के शासकीय प्रवक्ता मदन कौशिक ने कहा कि सरकार की और से इस प्रकार की कोई घोषणा नहीं की गई है और अब जनता का सरकार से विश्वास उठ गया है। किसानों की ऋण माफी के लिए लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव के समय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बडी बडी घोषणायें की गई लेकिन आज छह किसानों की आत्महत्या करने के बाद प्रदेश की त्रिवेन्द्र सरकार ने ऋण माफ करने से साफमना कर दिया जो सरकार की कार्य प्रणाली को दर्शाता है।

उनका कहना है कि जनता दरबार जनता के बीच में लगाये जाने चाहिए न की पार्टी के कार्यालय पर। उनका कहना है कि भाजपा कार्यालय में जब से दरबार लगाया गया और तब से लेकर प्रकाश पांडे के प्रकरण पर कितनी शिकायतों पर क्या कार्यवाही हुई है पर राज्य सरकार श्वेत पत्र जारी करें। उनका कहना है कि स्वर्गीय प्रकाश पांडे ने प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री व मंत्रियों को अवगत कराये जाने के बाद भी किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की गई है जो चिंता का विषय है। उनका कहना है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए जनता के बीच जाकर जन अभियान चलाया जायेगा, इसके लिए 29 जनवरी को पार्टी मुख्यालय कांग्रेस भवन से प्रदेश अध्यक्ष प्रीतम सिंह के नेतृत्व में साईकिल रैली घंटाघर, चकराता रोड, किशननगर चौक, बल्लूपुर रोड, जीएमएम रोड, निरंजनपुर, क्लमेनटाउन होते हुए मौहब्बेवाला में पहला चरण समाप्त किया जायेगा और इस अवसर पर नेता प्रतिपक्ष डा. इंदिरा हृदयेश रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगी। इस अवसर पर अनेक पदाधिकारी मौजूद थे।

शिया वक्फबोर्ड के खिलाफगरजे मुस्लिम समाज

नगर संवाददाता

देहरादून। शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन वसीम रिजवी ने देश में चल रहे मदरसों के बारे में अशोभनीय बयान दिये जाने के खिलाफ तंजीम-ए-रहनुमा-ए- मिल्लत के कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन किया और वहां पर उन्होंने शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन वसीम रिजवी ने देश में चल रहे मदरसों के बारे में अशोभनीय बयान दिये जाने के खिलाफ मिल्लत के कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी कार्यालय में इकटठा हुए और जिला प्रशासन के जरिये राष्ट्रपति को ज्ञापन प्रेषित करते हुए इस ओर उचित कार्यवाही किये जाने की मांग की।

यहां मिल्लत के कार्यकर्ता केन्द्रीय अध्यक्ष लताफ्त हुसैन के नेतृत्व में जिलाधिकारी कार्यालय में इकटठा हुए और वहां पर उन्होंने शिया वक्फ बोर्ड के चेयरमैन वसीम रिजवी ने देश में चल रहे मदरसों के बारे में अशोभनीय बयान दिये जाने के खिलाफ मिल्लत के कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी कार्यालय में इकटठा हुए और जिला प्रशासन के जरिये राष्ट्रपति को ज्ञापन प्रेषित करते हुए इस ओर उचित कार्यवाही किये जाने की मांग की। उनका कहना है कि ऐसे व्यक्ति को तत्काल गिरफ्तार कर बोर्ड को भंग करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि मदरसों के बारे में अनुचित बाते कहकर देशद्रोही होने का भी वसीम रिजवी ने सबूत दिया है और देश में अराजकता फैलाने की कोशिश की है जिसे किसी भी दशा में सहन नहीं किया जायेगा। उनका कहना है कि मदरसे दीनी, दुनियावी, उर्दू की तालीम देकर देश में शिक्षा, भाईचारा व अमन को बुलंद करते है और उन्हें शायद देश के इतिहास का भी ज्ञान नहीं, इन्हीं मदरसों ने मुल्क की आजादी के लिए अपनी आवाजें बुलंद की और इन्ही के उलमाओं ने अपनी शहादतें देकर देश की आजादी में बहुत बडा योगदान दिया है और मदरसे जहां दीन की खुश्बू दुनियां में फैला रहे है वहीं आपसी भाईचारे व शांति का संदेश दे रहे है।

वक्ताओं का कहना है कि वसीम रिजवी मौका परस्त और समय के अनुसार अपना बयान पलटने वाला व अपनी कुर्सी बचाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते है। उनका कहना है कि वक्फकी सम्पत्तियों को घेरने, कब्जा करने के आरोप लगते रहे है और इन सब से बचने के लिए पूर्व में बावरी मस्जिद के संबंध में और अब मदरसों के बारे में गलत बयानबाजी करने व दवाब डालकर अपने को बचाने की नाकाम कोशिश कर रहा है और इस व्यक्ति पर तत्काल दण्डात्मक कार्यवाही की जानी चाहिए और उन्हें पदमुक्त करना भी अब आवश्यक हो गया है। इस अवसर पर जिला प्रशासन के जरिये राष्ट्रपति को ज्ञापन प्रेषित करते हुए इस मामले में उचित कार्यवाही किये जाने की मांग की गई है। इस अवसर पर अनेक कार्यकर्ता मौजूद थे।

सरकार के खिलाफआंदोलनकारियों का क्रमिक अनशन

नगर संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड राज्य निर्माण सेनानी मंच ने अपनी सात सूत्रीय मांगों के समाधान के लिए अपने आंदोलन को जारी रखते हुए प्रदेश सरकार को के खिलाफ प्रदर्शन कर धरना दिया वहीं आंदोलनकारी क्रमिक अनशन पर बैठे रहे और कहा कि अब सरकार के खिलाफ आर पार का आदोलन चलाया जायेगा। इसके लिए रणनीति तैयार की जायेगी। उनका कहना है कि सरकार इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रही है, जो चिंता का विषय है। उनका कहना है कि आज 203 दिन होने के बाद भी उनकी मांगों पर किसी भी प्रकार का ध्यान सरकार नहीं दे रही है।

यहां मंच से जुडे हुए आंदोलनकारी कचहरी स्थित शहीद स्थल में अध्यक्ष नंदाबल्लभ पांडेय के नेतृत्व में इकटठा हुए और वहां पर उन्होंने अपनी सात सूत्रीय मांगों के समाधान के लिए प्रदर्शन करते हुए धरना दिया और अपने क्रमिक अनशन को जारी रखा। इस अवसर पर क्रमिक अनशन में पुष्पा बहुगुणा, मंतरा राणा, शांति शर्मा, विजय लक्ष्मी, गोमती देवी भटट, कलावती बहुखंडी, खुशीराम शर्मा, अनिता देवी, सरोज रावत, अनिता कुकरेती, बसंती रावत, चम्पा देवी, कमला बहुखंडी सहित अनेक आंदोलनकारी बैठे। वक्ताओं ने कहा है कि सरकार आंदोलनकारियों के हितों के प्रति गंभीर नहीं दिखाई दे रही है जिसके लिए आंदोलन करना पड़ रहा है। वहीं वह सरकार की जन विरोधी नीतियों से नाराज दिखाई दे रहे है।

उनका कहना है कि अभी तक 10 प्रतिशत का क्षैतिज आरक्षण नहीं मिल पाया है जो चिंता का विषय है। वक्ताओं ने कहा कि उत्तराखंड राज्य निर्माण सेनानी का दर्जा आंदोलनकारियों को शीघ्र ही प्रदान किया जाना चाहिए और सेनानियों के आश्रितों को रोजगार में समायोजित किये जाने तथा समीवर्ती जिलों से पलायन पर पूर्ण रूप से रोक लगाये जाने और आंदोलनकारियों को दस प्रतिशत क्षैतिज आरक्षण को शीघ्र ही प्रदान किया जाना चाहिए। वक्ताओं ने कहा कि समूचे उत्तराखंड को आरक्षित किया जाये और मुजफ्फरनगर रामपुर तिराहे के दोषियों को फांसी दिये जाने की मांग की गई है लेकिन अभी तक इस ओर किसी भी प्रकार की कोई नीति तैयार नहीं की गई है।

उनका कहना है कि आज आंदोलन को काफी दिन हो गये, लेकिन किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं हो पा रही है जो चिंता का विषय है। उनका कहना है कि लगातार आंदोलनकारियों के हितों के लिए संघर्ष किया जा रहा है लेकिन प्रदेश सरकार इस ओर किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं कर पा रही है। उनका कहना है कि लगातार आंदोलनकारियों का उत्पीड़न किया जा रहा है और उनके हितों के लिए किसी भी प्रकार की कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है जिससे आंदोलनकारियों में रोष बना हुआ है। उनका कहना है कि शीघ्र ही आंदोलनकारियों की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो आंदोलन को तेज किया जायेगा और इसके लिए रणनीति तैयार की जायेगी। इस अवसर पर अनेक आंदोलनकारी मौजूद थे।

ओएनजीसी के लापता हेलिकॉप्टर का मलबा मिला, एक शव बरामद

मुंबई। एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) के सिग्नल से अचानक गायब होने वाले इस हेलीकॉप्टर में 7 लोग सवार हैं, जिसमें कुछ ओएनजीसी के भी कर्मचारी हैं। हेलीकॉप्टर 10रू20 बजे जुहू से उड़ा जिसे 10रू58 बजे ओएनजीसी के उत्तरी क्षेत्र में पहुंचना था। लेकिन 10रू30 के बाद कोई सिग्नल नहीं मिल पाया है। वह कंपनी के नॉर्थ फील्ड की ओर जा रहा था। अब खबर यह आ रही है कि मुंबई तट से करीब 30 नॉटिकल मील की दूरी पर अरब सागर में ओएनजीसी के लापता हेलिकॉप्टर का मलबा मिला है। कोस्ट गार्ड को बचाव अभियान के दौरान एक शव भी मिला है। अभियान में दो आईएसवी और कोस्ट गार्ड की तीन यूनिट में जुटी हुई है।

सांध्य दैनिक
क्राईम स्टोरी
website: www.crimestory.in
देहरादून
शनिवार, 13 जनवरी 2018

कौन बनेगा धर्मनगरी का पहला मेयर!

- मेयर को लेकर चर्चाओं का बाजार ऋषिकेश मे हुआ गर्म
- मेयर की फेहरिस्त मे शहर के तमाम राजनैतिक सूरमाओं के नाम शामिल
- राजनैतिक आकाओं की परिक्रमा के साथ शुरू हुई नुक्कड़ बैठके
- पोस्टर, बैनर और होल्डिगो से पटी तीर्थ नगरी

अमित सूरी

ऋषिकेश। कौन बनेगा ऋषिकेश का पहला मेयर? इन दिनों चर्चाओं के बाजार मे विषय सिर्फ और सिर्फ यही है। शहर में मौसम का मिजाज भले ही बेहद ठंडा हो लेकर राजनैतिक सरगर्मियां धीरे-धीरे अपने उफान की और बढनें लगी हैं। इसकी तपिश भी आम और खास सभी लोगों मे महसूस की जा रही है।

आपको बता दें कि उत्तराखंड के मुख्य द्वार ऋषिकेश की नगर पालिका को प्रदेश सरकार द्वारा अपग्रेड करके नगर निगम का दर्जा दे दिया गया है। सरकार की घोषणा के बाद अप्रैल माह मे संभावित नगर निगम चुनाव को देखते हुए तमाम राजनैतिक सूरमाओं ने चुनावी तैयारियां जोरशोर से शुरू कर दी हैं। हांलाकि चुनावी अधिसूचना जारी होने मे कुछ और वक्त है और नगर निगम में मेयर की सीट सामान्य रहेगी या फिर महिला आरक्षित होगी इस पर भी सस्पेंस बना हुआ है। बावजूद इसके शहर मे तमाम संभावित राजनैतिक योद्वाओं ने तीर्थनगरी को पोस्टर, बैनर और बड़े बड़े होल्डिगों से पाट दिया है। राष्ट्रीय दलों की बात करें तो भाजपा और कांग्रेस मे चुनावी दंगल से पूर्व सिम्बल की लड़ाई को लेकर सियासी घमासान तेज होता नजर आ रहा

है सामान्य सीट होने की सूरत मे भाजपा मे सिम्बल की रेस मे फिलहाल कांग्रेस का दामन छोड़ भाजपा मे शामिल हुए पूर्व मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा के खेमे के माने जाने वाले भगत राम कोठारी सबसे आगे बताये जा रहे हैं लेकिन मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत के बालसखा कृष्ण कुमार सिंघल भी इस रेस मे बने हुए हैं, अन्य दावेदारों मे विधानसभा अध्यक्ष के करीबी माने जाने वाले रवीन्द्र राणा का नाम भी इस फेहरिस्त मे बताया जा रहा है।

जबकि महिला सीट होने पर पूर्व पालिकाध्यक्ष स्नेहलता शर्मा, भाजपा की प्रदेश उपाध्यक्ष कुसुम कंडवाल, राज्य आंदोलनकारी व पूर्व सभासद सरोज डिमरी, भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष अनिता ममगंई व भाजपा की जिला उपाध्यक्ष व निर्वतमान सभासद कविता शाह मे से किसी एक की लाटरी लगनी तय मानी जा रही है। कांग्रेस मे मेयर के टिकट की दौड़ मे सामान्य सीट पर फिलहाल जिलाध्यक्ष जयेंद्र रमोला दौड़ मे सबसे आगे माने जा रहे हैं लेकिन कयास यह भी लग रहें हैं कि दो बार विधानसभा चुनाव लड़ चुके कांग्रेस के प्रदेश महासचिव राजपाल खरौला पर भी अंतिम समय मे पार्टी दांव खेल सकती है। अन्य दावेदारों मे निर्वतमान सभासद मनीष शर्मा व सुधीर राय के नामों की सुगबुगाहट भी चहाँ चल रही है। महत्वपूर्ण यह भी है कि सामान्य सीट होने की सूरत मे नगर पालिका अध्यक्ष पद पर जीत की हैट्रिक लगा कर इतिहास रच चुके निर्वतमान पालिकाध्यक्ष दीप शर्मा का अपने लम्बे राजनैतिक अनुभव के आधार पर निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर प्रथम मेयर के रूप मे प्रबल प्रत्याशी बनकर उभरना तय है। उधर बसपा से पूर्व सभासद रवि कुमार जैन और विधानसभा प्रत्याशी रहे लल्लन राजभर के नामों की चर्चा है। पिछले कुछ दिनों में विधानसभा चुनाव मे भाजपा से बगावत कर चुनावी ताल ठोक चुके संदीप गुप्ता का नाम भी तेजी से उभर कर सामने आया है। इन सबके बीच चुनावी बिसात बिछने से पूर्व तमाम संभावित चुनावी योद्वाओं ने नुक्कड़ बैठकें आरम्भ करने के साथ साथ अपने पक्ष मे लामबंदी सहित टिकट के लिए अपने राजनैतिक आकाओं की परिक्रमा शुरू कर दी है।

चरस के साथ दो तस्कर दबोचे

सहसपुर। इलाके की पुलिस ने चैकिंग के दौरान दो संदिग्धों को जब हिरासत में लिया तो उनके पास से भारी मात्रा में चरस बरामद हुई जो कि यह हिमाचल, त्यूडी से लाने का धंधा किया करते थे।

थाना प्रभारी नरेश राठौर ने बताया कि पुलिस द्वारा संदिग्ध व्यक्तियों व वाहनों की चैकिंग की जा रही थी। रामपुर पुल के नीचे से पुलिस ने सहसपुर निवासी वाहिद व दामोदर को जब हिरासत में लिया तो उनके पास से दो किलो डेढ सौ ग्राम चरस बरामद हुई। उन्होंने बताया कि चरस तस्करों ने खुलासा किया कि वह आपस में एक दूसरे को लम्बे समय से जानते हैं और कोई अच्छा रोजगार न होने के कारण पैसों के लालच में हिमाचल, त्यूडी व भगवानपुर से सस्ते दामों में चरस लाकर देहरादून में पढने वाले छात्रों को मोटे दामों पर यह चरस बेचते हैं। इन तस्करों के पकडे जाने से नशा बेचने वालों में हडकम्प मचा हुआ है।

पांडे प्रकरण में प्रदेश सरकार संवेदनशील

नगर संवाददाता

देहरादून। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता गोपाल नारसन ने कहा कि मृतक व्यापारी प्रकाश पांडे के मामले मे त्रिवेन्द्र सरकार इतनी संवेदनहीन हो जायेगी शायद ही किसी ने सोचा हो। जबकि पांडे की मौत के लिए सीधे सीधे त्रिवेन्द्र सरकार ही जिम्मेदार है। उन्होंने मुख्यमंत्री से मृतक प्रकाश पांडे के परिवार पर अपनी जिम्मेदारी के नाते न सही मानवता के नाते रहम कर उनके परिवार को घोषणा के अनुरूप सरकारी नोकरी व 12 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की मांग की है। उनका कहना है कि सरकार इस मामले में गंभीर नहीं दिखाई दे रही है।

यहां जारी एक बयान में उन्होंने कहा कि त्रिवेन्द्र सरकार के जनता दरबार में प्रकाश पांडे द्वारा जहर खाकर आत्महत्या कर लेना। वह भी इस सरकार की संवेदनहीनता का शिकार होकर । बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। उनका कहना है कि ऐसा लग रहा है कि जैसे सरकार की आत्मा भी मृत प्राय हो गई हो। मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत जिनके बारे में कहा जाता है कि वह एक संवेदनशील व अच्छे इंसान हैं । लेकिन उत्तराखंड में जबसे जन जन की जुबान पर प्रकाश पांडे का आत्महत्या कांड आया है तब से मुख्यमंत्री भावना शुन्य व संवेदनहीन से हो गए हैं ।मृतक और मृतक परिवार के प्रति त्रिवेंद्र सिंह रावत का व्यवहार इतना कठोर होगा यह किसी ने सोचा भी न था । मुख्यमंत्री जनता के प्रतिनिधि ही नही बल्कि प्रदेश के मुखिया भी है । उनका कहना है कि मुखिया परिवार के सबसे बडे सदस्य को कहा जाता है । परिवार के दुख दर्द में मुखिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, लेकिन त्रिवेंद्र सिंह रावत ने तो मृतक प्रकाश पांडे और उसके परिवार की तरफसे पूरी तरह से मुंहमोड लिया है ,ऐसा तो दुश्मन भी नहीं करते हैं । किसी की मौत सात्वना के दो शब्दों से मृतक वापिस तो नही आता है लेकिन पीडित परिवार को ढाढस जरूर मिल जाता है ।

उनका कहना है कि प्रकाश पांडे प्रकरण में उत्तराखंड सरकार की संवेदनहीनता शुरू से सामने आती रही। पहले तो मुख्यमंत्री के एक ओएसडी प्रकाश पांडे को उकसाने का काम करते रहे। उन्होंने प्रकाश पांडे को यहां तक कहा कि वह एक फर्जी बीपीएल बनवा लेगा तो उसे सरकार से आर्थिक सहायता दिला दी जाएगी । इसके बाद हल्द्वानी से देहरादून जनता दरबार में बुलाने का लालच भी मुख्यमंत्री के उस ओएसडी ने ही दिया । इसके बाद जनता दरबार में केबिनेट मंत्री ने प्रकाश पांडे को गंभीरता से लेना तो दूर उन्हें जनता दरबार से बाहर करने का फरमान जारी कर दिया । उनका कहना है कि बाबजूद इसके कि प्रकाश पांडे बारंबार कहता रहा कि उसने जहर खा लिया है । मंत्री ने एक पीडित की पीडा को दरकिनार कर दिया। इस पर सोचने की जरूरत है और सरकार को भी इस ओर कार्यवाही करने की जरूरत है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक राजेश शर्मा द्वारा इंटर ग्राफिक प्रिंटर्स, 64-नेशविला रोड, देहरादून, उत्तराखण्ड से मुद्रित, 142 श्रीदेव सुमन नगर बल्लूपुर रोड देहरादून से प्रकाशित।
सम्पादक : राजेश शर्मा मो.- 9897598151, **प्रबंध सम्पादक :** अभिषेक शाही मो.- 9897865003 कानूनी सलाहकार: प्रकाश टी पाल **E-mail ID:** crimestory.dial100@gmail.com नोट: समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन ही होंगे।